

Mr.Sanjay Kumar
(Assistant Professor)
Dept.Of Psychology
C.M.J. College, Donwarihat
Khutauna,Madhubani
9905430675(Mobile/WhatsApp)
Email- sanjayuttam725@gmail.com

B.A. PART -I. PAPER-I

क्लासिकी अनुबंधन: तथ्य (CLASSICAL CONDITIONING: PHENOMENON)

क्लासिकी अनुबंधन में सीखना का आधार अनुबंधन को माना गया है। अनुबंधन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा उद्दीपक तथा अनुक्रिया के बीच एक साहचर्य स्थापित होता है।

क्लासिकल अनुबंधन के संबंध में पैवलव द्वारा किए गए प्रयोग के कुछ मुख्य तथ्य हैं, जो निम्नांकित हैं-

1) उत्तेजक का नियम(law of excitation)- इस नियम के अनुसार यदि तटस्थ उद्दीपक(CS) को स्वाभाविक उद्दीपक(UCS) के साथ बार-बार उपस्थित किया जाता है तो ऐसी अवस्था में तटस्थ उद्दीपक प्राणी में एक सामान्य उत्तेजना पैदा करना प्रारंभ कर देता है। ऐसी अवस्था में तटस्थ उद्दीपक प्राणी को इस हद तक उत्तेजित कर देता है कि वह अनुबंधित अनुक्रिया(CR) करने के लिए तत्पर हो जाता है।

2) आंतरिक अवरोध का नियम(law of internal inhibition) -इस नियम के अनुसार जब तटस्थ उद्दीपक (घंटी) के बाद स्वाभाविक उद्दीपक(भोजन) नहीं दिया जाता है तो ऐसी परिस्थिति में प्राणी धीरे-धीरे तटस्थ उद्दीपक के प्रति अनुक्रिया करना बंद करने लगता है। यानी धीरे-धीरे प्राणी में सीखी गई अनुक्रिया का विलोपन(extinction) होने लगता है। पैवलव के अनुसार घंटी बजने के बाद भोजन के नहीं दिए जाने की परिस्थिति में प्राणी में एक विशेष प्रवृत्ति(tendency) उत्पन्न होती है जो प्राणी को सीखी गई अनुक्रिया को करने से रोकता है। प्राणी सीखी गई अनुक्रिया का भूला नहीं होता है बल्कि जानबूझकर उसे नहीं करता है क्योंकि ऐसा करने की एक विशेष तत्परता उसमें उत्पन्न हो जाती है जिसे पैवलव ने आंतरिक अवरोध का नियम कहा है।

3) बाह्य अवरोध का नियम(law of external inhibition) -जब सीखने के दौरान कोई नया उद्दीपक ,अनुबंधित उद्दीपक के साथ दिया जाता है तो इससे सीखने की प्रक्रिया धीमी हो जाती है। इस तरह के अवरोध को बाह्य अवरोध(external inhibition) कहा जाता है। जब प्राणी तटस्थ उद्दीपक तथा स्वाभाविक उद्दीपक को एक दूसरे से संबंधित करना सीखता है तो उस समय अगर कोई बाह्य उद्दीपक, जैसे- रोशनी(light); उपस्थित करके तटस्थ उद्दीपक दिया जाता है तो वैसी परिस्थिति में सीखने की गति थोड़े समय के लिए अवरुद्ध हो जाती है। चूंकि इस तरह का अवरोध व्यक्ति में किसी बाह्य उद्दीपक के कारण होता है। अतः पैवलव ने इसे बाह्य अवरोध की संज्ञा दी है।

4) अनुबंधित उद्दीपक तथा स्वाभाविक उद्दीपक के बीच का कालिक क्रम(temporal sequence of conditional stimulus and unconditional stimulus) - पैवलव तथा अन्य मनोवैज्ञानिकों के अनुसार सीएस तथा यूसीएस के बीच का समय अंतराल लगभग ०.5 सेकंड (500 मिली सेकंड) होना चाहिए। इन दोनों उद्दीपकों के बीच समय अंतराल बढ़ने से अनुबंधित अनुक्रिया की शक्ति कमजोर होती जाती है। इससे कम या अधिक समय रहने पर अनुबंधन का होना कठिन हो जाता है। पैवलव तथा उनके शिष्यों ने निम्नांकित 4 तरह के कालिक क्रम पर बल डाला है।-

क) समक्षणिक कालिक क्रम(Stimultaneous temporal sequence) -इस क्रम में अनुबंधित उद्दीपक 'घंटी' तथा स्वाभाविक उद्दीपक 'भोजन' को साथ-साथ प्राणी के सामने उपस्थित किया जाता है और फिर एक ही साथ दोनों को हटा लिया जाता है।

ख) विलंबित कालिक क्रम(delayed temporal sequence) - इस क्रम में अनुबंधित उद्दीपक जैसे-घंटी को पहले ही बजा दिया जाता है और तब तक लगातार बजता रहता है जब तक कि स्वाभाविक उद्दीपक (भोजन) प्राणी के सामने नहीं दिया जाता।

ग) संकेत कालिक क्रम(trace temporal sequence)- इस क्रम में अनुबंधित उद्दीपक जैसे घंटी को पहले प्राणी के सामने बजाया जाता है फिर कुछ सेकंड तक बजने के बाद उसे हटा लिया जाता है और उसके बाद स्वाभाविक उद्दीपक (भोजन) दिया जाता है।

घ) पश्चगामी कालिक क्रम(backward temporal sequence)-उपरोक्त तीनों कालिक क्रमों में (CS) पहले तथा (UCS) बाद में आता है। जबकि इस क्रम में (UCS) भोजन पहले आता आता है तथा अनुबंधित उद्दीपक घंटी (CS) बाद में आता है।

इन चारों तरह के अनुबंधन में पश्चगामी अनुबंधन द्वारा सीखी गई अनुक्रिया की शक्ति सबसे कमजोर तथा समक्षणीक अनुबंधन द्वारा सीखी गई अनुक्रिया की शक्ति सबसे अधिक होती है।

5) उद्दीपक समान्यीकरण(stimulus generalization)- सीखने के प्रारंभिक क्रम में देखा जाता है कि मूल अनुबंधित उद्दीपक के प्रति प्राणी अनुक्रिया तो करता ही है, साथ-ही-साथ उससे मिलते-जुलते अन्य उद्दीपकों के प्रति भी उसी ढंग से अनुक्रिया करता है। इसे उद्दीपक समान्यीकरण कहा जाता है। जैसे - कुत्ते को घंटी की आवाज के साथ साथ अगर एक बल्ब जलाकर स्वाभाविक उद्दीपक 'भोजन' दिया जाए तो वह धीरे-धीरे बल्ब की रोशनी के साथ भी अनुबंधित हो जाएगा और वह बल्ब की रोशनी के साथ वैसा ही अनुक्रिया उत्पन्न करेगा जो घंटी की आवाज के साथ करता है। इसे ही उद्दीपक समान्यीकरण कहा जाता है।

6) विभेदन(discrimination)-विभेदन की घटना उद्दीपक समान्यीकरण के ठीक विपरीत घटना है। जैसे-जैसे सीखने के लिए दिए जाने वाले प्रयासों की संख्या बढ़ती जाती है वैसे वैसे प्राणी मूल अनुबंधित उद्दीपक(original conditioned stimulus) तथा अन्य सामान उद्दीपकों (similar stimuli) के बीच स्पष्ट अंतर या विभेद कर लेता है। इसके परिणामस्वरूप प्राणी सिर्फ मूल अनुबंधित उद्दीपक के प्रति ही अनुक्रिया करता है तथा अन्य समान उद्दीपकों के प्रति अनुक्रिया नहीं करता। इसे ही विभेदन की संज्ञा दी जाती है।

7) उच्च-कोटि अनुबंधन(higher-order conditioning)- उच्च कोटि अनुबंधन में, किसी भी अनुबंधित उद्दीपक को अनुबंधन के आगे की प्रक्रिया में स्वाभाविक उद्दीपक के रूप में प्रयोग किया जाता है। जैसे यदि घंटी की आवाज(CS) है भोजन(UCS) है तथा लार-स्राव(salivation:CR) के रूप में स्थापित हो चुका है तो घंटी को(UCS) के रूप में आगे प्रयोग किया जा सकता है। जब बल्ब की रोशनी तथा घंटी को बार-बार संयोजित कर प्राणी के सामने रखा जाए तो लार-स्राव की अनुक्रिया, जो पहले घंटी की आवाज पर होती थी, मात्र बल्ब की रोशनी जलते ही होने लगेगी। इसे ही उच्च कोटि या द्वितीय-कोटि (second-order conditioning) अनुबंधन कहा जाता है।

8) विलोपन तथा स्वतः पूर्णलाभ(extinction & spontaneous recovery)- प्राणी में अनुबंधन उत्पन्न होने के बाद जब सिर्फ CS(घंटी) दिया जाता है और UCS (भोजन) नहीं दिया जाता और इस प्रक्रिया को बार-बार दोहराने पर; धीरे-धीरे सीखी गई अनुक्रिया की शक्ति कम होने लगती है। यानी कृता धीरे-धीरे घंटी की आवाज पर लार का स्राव कम करने लगता है और अंत में ऐसा समय आता है जब घंटी बजती है परंतु लार-स्राव बिल्कुल नहीं होता। पैवलव ने इस तरह की घटना को विलोपन की संज्ञा दी है।

विलोपन से संबंधित एक दूसरी घटना स्वतः पूर्णलाभ है। पैवलव तथा उनके शिष्यों ने अपने प्रयोगात्मक अध्ययनों में पाया कि जब किसी सीखी गई अनुक्रिया का आंशिक रूप से विलोपन हो जाता है और उसके कुछ समय बीतने के बाद यदि पुनः CS (घंटी) दिया जाता है और प्राणी (कृता) फिर से CR (लार का स्राव) करने लगता है तो ऐसी स्थिति को स्वतः पूर्णलाभ कहते हैं।

9) पुनर्बलन(reinforcement)- पैवेलियन अनुबंधन में पुनर्बलन का महत्वपूर्ण स्थान है। पैवलव के प्रयोग में भोजन एक प्रकार का पुनर्बलन है, जो कुत्ते को लार-स्राव की अनुक्रिया करने के लिए प्रेरित करता है।

10) आभासी अनुबंधन(pseudoconditioning)- कभी-कभी ऐसा देखा जाता है कि प्राणी प्रयोगात्मक परिस्थिति में कुछ वैसा व्यवहार दिखलाता है जो उस समय होना चाहिए, जब सचमुच में अनुबंधन हो जाता है। प्रायः आभासी अनुबंधन तब होता है जब प्राणी में सामान्य उत्तेजनशीलता(general excitability) अधिक होती है।

उपरोक्त वर्णित तथ्यों के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि पैवेलियन अनुबंधन में बहुत तरह की घटनाएं होती हैं जिनसे सीधे या परोक्ष रूप से अनुबंधित अनुक्रिया की शक्ति प्रभावित होती है।